''ज्योति की संतान''

(5:8-13)

कई मण्डलियों में, छोटे बच्चों को ''मैं एक छोटा दीया यीशु का ...'' गीत सिखाया जाता है। परन्तु यह केवल बच्चों का गीत ही नहीं है; इसमें जीवन का सही दृष्टिकोण भी है। जीवन अंधकार और प्रकाश के बीच चलने वाला एक नैतिक संघर्ष है। मसीही होने के कारण, हम इस संघर्ष में शामिल हैं।

परमेश्वर का वचन हमें अंधेरे जगत में प्रकाश बनने अर्थात अपने आप को अलग करने के लिए बुलाता है। इफिसियों 5 अध्याय में बाइबल में मसीही लोगों को ''ज्योति की संतान'' कहा गया है:

> ज़्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो। (ज़्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)। और यह परखो, कि प्रभु को ज़्या भाता है? और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो। ज़्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है। पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रकट होते हैं, ज़्योंकि जो सब कुछ को प्रकट करता है, वह ज्योति है (5:8-13)।

फिर से ध्यान दें कि आयत 8 ज़्या कहती है: ''ज़्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो।'' हमारे पिछले जीवनों का हाल बताने में पौलुस को लाभ दिखाई दिया। वह चाहता था कि मसीही लोग भूल न जाएं कि यीशु के बिना उनकी स्थिति ज़्या थी। इस पद में एक ही शब्द में बता दिया गया कि हमारे पिछले जीवन कैसे थे-''अंधकार।'' हम न केवल अंधकार में रहते थे बल्कि स्वयं भी अंधकार *थे।* परमेश्वर का वचन इस अंधकार का वर्णन करता है।

अंधकार में जीना

अंधकार को बुराई द्वारा उत्पन्न किए गए बिगाड़ में गलत काम करना अच्छा लगता है (नीतिवचन 2:14)। अंधकार दुष्टों का मार्ग है (नीतिवचन 4:19)। यह बुराई को ''भलाई'' और भलाई को ''बुराई'' कहकर परमेश्वर के आदेश को पलट देता है। (यशायाह 5:20)। अंधकार लोगों को वश में कर लेता है (यशायाह 42:7)।

सुना है कि अंधकार में पूरे शरीर में फैलने की शक्ति है (मत्ती 6:23)। बाइबल ऐलान करती है कि न्याय के समय पापियों को अंधकार के कुंड में फैंक दिया जाएगा (मत्ती 8:12)। बाइबल यह भी कहती है कि लोग यीशु का इन्कार इसलिए करते हैं क्योंकि वे अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय मानते हैं (यूहन्ना 3:19)। अंधकार में लोग शैतान की शक्ति के अधीन आ जाते हैं (प्रेरितों 26:18)। तथ्य यह है कि अंधकार अपने आप में एक सामर्थ है, अर्थात यह एक ऐसी सामर्थ है,जिससे हम अपने आप को बचा नहीं सकते (कुलुस्सियों 1:12, 13)। अंधकार लोगों को अंधा कर देता है (1 यूहन्ना 2:11)। इफिसियों की पत्री के अंत में हम पढ़ते हैं कि "हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और सांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं" (6:12)।

बाइबल में एक सौ पदों के अंत में, हमें बुराई और नैतिक अंधकार की हानि का पता चलता है। मुझे नहीं लगता कि मसीही लोगों को इस बात की समझ है कि संसार वास्तव में कितना अंधकारमय है। हम इस बारे में सोचते ही नहीं हैं। हम ज्योति की संतान बनने के बारे में सोचने को प्राथमिकता दे सकते हैं, परन्तु हमें अंधकार के खतरे को नहीं भूलना चाहिए।

अपराध के जितने समाचार हम पढ़ते या सुनते हैं, उन सब के पीछे अंधकार ही तो होता है। पाप के किसी भी कार्य में अंधकार की शक्ति अवश्य कार्य कर रही होती है। अंधकार से परिवार टूट जाते हैं; यह लोगों को नशेड़ी बना देता है; और घृणा उत्पन्न करता है। यह वासना के लिए आधार पैदा करता है, और बुराई तथा हिंसा भड़काता है। अंधकार द्वेष उत्पन्न करता है, झगड़े को बढ़ाता है और लोगों को स्वार्थी बनाता है। यह मनुष्यों से ऐसे काम करवाता है, जिनके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। बाइबल स्पष्ट कर देती है:

> इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। ...
>
> और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैर भाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर। बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले, माता पिता की आज्ञा न मानने वाले। निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मया-रहित और निर्दयी हो गए (रोमियों 1:21, 28-31)।

मसीह से पहले, हम केवल अंधकार *में* ही नहीं, बल्कि स्वयं अंधकार *थे*।

ज्योति में चलना

यद्यपि किसी समय हम अंधकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हैं (5:8)। पौलुस ने मसीही लोगों से ''ज्योति की संतान की नाईं'' चलने को कहा। देखें कि परमेश्वर का वचन ज्योति के बारे में ज़्या कहता है।

1. *ज्योति का फल अच्छा होता है।* ''(ज़्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता और सत्य है)'' (5:9)। ''भलाई'' (यू.: *agathosune*) का सज़्बन्ध नैतिक श्रेष्ठता से है। हम सच्चाई को जानने से भी आगे बढ़ जाते हैं अर्थात इसमें जीते हैं। ज्योति का फल होता है। इसका फल दूसरों की भलाई के लिए स्वेच्छा से तथा बलिदानपूर्वक सेवा में मिलता है। ''धार्मिकता'' (यू.: *dikaiosune*) ''मनुष्यों को तथा परमेश्वर को उनका अधिकार देना'' है।[1] इसका अर्थ परमेश्वर तथा लोगों के साथ ऐसे व्यवहार करना है जैसे हमें करना चाहिए। ''सत्य'' (यू.: *aletheia*) केवल वही नहीं है जो हम जानते हैं बल्कि वह है जो हम करते हैं। ज्योति हमें इतना मज़बूत बना देती है कि हम सच्चाई को जानते ही नहीं बल्कि उसमें जीवन भी बिताते हैं।

2. *ज्योति पता लगा लेती है कि प्रभु को ज़्या भाता है* (5:10)। अनुवादित शज़्द ''परखो'' (यू.: *dokimazo*) का अनुवाद ''ढूंढ़ लेती'' भी हो सकता है। यह शज़्द पूर्व के प्राचीन बाज़ारों से निकला है। भीड़ भरे उन बाज़ारों की छोटी-छोटी दुकानों में खिड़कियां भी नहीं होती थीं। दुकानों में अंधेरा होता था। दुकान में रखा सामान देखना कठिन होता था। चीजों की अच्छी तरह जांच करना लगभग असज़्भव होता था। लोग मिट्टी का बर्तन, कपड़ा या जो कुछ भी उन्हें खरीदना होता था, बाहर ले जाकर रोशनी में देखते थे। तब कहीं वे दाग, धज़्बा या दरार आदि को देख पाते थे जो अंधेरे में नहीं देखी जा सकती थी।

यीशु के निकट रहने पर हमारे लिए यही होता है। उसके प्रकाश से हमें अपने उद्देश्यों, कार्यों तथा बातों को इसी तरह देखने में सहायता मिलती है। उसके प्रकाश में हम यह देख पाते हैं कि हममें ऐसा ज़्या है जो यीशु को ज़ाता है और हमारे जीवनों में से उन नैतिक त्रुटियों और पापों को देखकर निकालने में भी सहायता मिलती है।

3. *ज्योति या रोशनी से बुराई प्रगट हो जाती है।* ''और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, बरन उन पर उलाहना दो। ज़्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है। पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रकट होते हैं, ज़्योंकि जो सब कुछ को प्रकट करता है, वह ज्योति है'' (5:11-13)। बुराई को बाहर लाने के लिए उस पर सच्चाई की रोशनी डाली जाती है।

पिछली गर्मियों में हम परिवार सहित केन्द्रीय टैज़्सस में लॉन्ग हॉर्न केवर्स में गए। बीच में एक जगह, गाइड ने लाइटें बुझा दीं। उसने हमें पूर्ण अंधकार का अनुभव लेने दिया। ऐसा लगा जैसे हमारे चारों ओर अंधकार ही अंधकार है। उस अंधकार में मैं कुछ देख नहीं पाया। जब गाइड ने फिर से गाड़ी का स्विच ऑन किया तो अंधेरा एक दम गायब हो गया। ज्योति अंधकार पर विजय पा लेती है। केन्द्रीय टैज़्सस की एक गुफ़ा में यह सत्य था और हमारे आत्मिक जीवनों में भी यह सत्य है। यीशु की ज्योति अंधकार में चमकती है।

हर व्यज़्ति जो मसीह का है और यीशु मसीह के सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर की संतान है, वह एक जीवित गवाही है कि ज्योति अंधकार में चमकती है। एक समय था जब हम अंधकार थे। परन्तु अब हम प्रभु में ज्योति हैं। यीशु हमारा इतना ध्यान रखता है कि वह हमारे जीवनों में अपने प्रकाश को चमकाना चाहता है अर्थात वह अंधकार को दूर करके हमें रोशनी देना चाहता है।

सारांश

हमारा जीवन ज्योति की संतान की तरह होना चाहिए। इस सप्ताह स्कूल में जाएं और याद करें कि आप उस जगह में एक ज्योति हैं। इस सप्ताह काम पर जाएं और अपने आस पास के लोगों के लिए ज्योति बनें। अपने घर के लोगों के लिए ज्योति बनें। जब वे आपको देखें तो उन्हें आप में यीशु की रोशनी दिखाई देनी चाहिए।

यदि आप मसीही नहीं हैं, तो मसीह के पास आएं अर्थात अंधकार के अपने जीवन से मन फिराएं। अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें। अंधकार से ज्योति में निकल आएं।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू द गलेशियंस एण्ड इफिसियंस,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज, संशो. संस्क. (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 164.